International Journal of Advanced Educational Research
www.multidisciplinaryjournals.org
ISSN: 2455-6157
Received: 28-12-2022, Accepted: 14-01-2023, Published: 30-01-2023
Volume 8, Issue 1, 2023, Page No. 8-10

रविन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता

संजीव कुमार चौहान[1], डॉ० योगेश्वर प्रसाद शर्मा[2]
[1] शोधार्थी, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध पर्यवेक्षक, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
अति प्राचीन काल से भारत सिद्ध पुरुषों एवं युग निर्माताओं का देश रहा है। रविन्द्रनाथ टैगोर भी उन्हीं लोगों में से एक थे। रविन्द्रनाथ टैगोर का जीवन आधुनिक भारत के पूरे युग में फैला हुआ है। उनके व्यक्तित्व विकास में नवजागरण की मुख्य बातें पाई जाती है। इस प्रकार के अद्वितीय व्यक्तित्व के कारण रविन्द्रनाथ टैगोर अपने को एक महान कवि, साहित्यकार, समाज सुधारक और दार्शनिक के रूप में सीमित ना रख सके। बल्कि अपने महान विचारों के द्वारा जन समुदाय को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिए वे एक महान शिक्षा शास्त्री व शिक्षा विशेषज्ञ के रूप में हमारे लिए वरदान सिद्ध हुए। शिक्षाशास्त्र में उनकी देनों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वे एक उच्च कोटि के शिक्षा शास्त्री थे, यद्यपि उन्होंने अध्यापन का पेशा कभी नहीं ग्रहण किया। उनकी प्रज्ञा इतनी प्रबल थी कि वे अपनी बुद्धि के सहारे किसी विषय की तह में बैठ सकते थे। किसी पदार्थ की मूल प्रकृति एवं उसके वास्तविक स्वरूप का पता लगा लेने में ये सिद्धहस्त थे। उनकी बुद्धि का ही यह कमाल था कि जिस समय भारत शिक्षा के क्षेत्र में पश्चिम का अनुकरण करने में लगा हुआ था, उस समय वे आधुनिक भारतीय जीवन के अनुकूल एक शिक्षा प्रणाली की खोज कर रहे थे। जिस समय भारतीय विश्वविद्यालयों में पश्चिमी सिद्धान्तों को दिव्य मानकर आत्मसात् किया जा रहा था उस समय वे शिक्षा के नये सिद्धान्तों का पता लगाने में जुटे हुए थे। रविन्द्रनाथ टैगोर समाज का उन्नयन करना चाहते थे और अतीत भारत की आत्मा में देखना चाहते थे। वे समाज को प्राकृतिक नियमों पर आधारित तो करना चाहते थे किन्तु आधुनिक वैज्ञानिकता एवं अतीत की धार्मिकता एवं नैतिकता से विहीन समाज को अच्छा नहीं समझते थे।

मूल शब्द: रविन्द्रनाथ टैगोर का परिचय, अध्ययन का उद्देश्य, परिकल्पना, आंकड़ों का संग्रह और अध्ययन विधि, अध्ययन का सीमांकन, रविन्द्रनाथ टैगोर जी का शैक्षिक दर्शन, रविन्द्रनाथ टैगोर जी के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

रविन्द्रनाथ टैगोर का परिचय

रविन्द्रनाथ टैगोर का जन्म देवेन्द्रनाथ टैगोर और शारदा देवी की सन्तान के रूप में 7 मई 1861 को कलकत्ता के जोड़ा साँको ठाकुरबाड़ी में हुआ। उनकी विद्यालय की पढ़ाई प्रतिष्ठित सेंट जेवियर स्कूल में हुई। उन्होंने बैरिस्टर बनने की चाहत में 1878 में इंग्लैण्ड के ब्रिजटोन में पब्लिक स्कूल में नाम दर्ज कराया। उन्होंने लन्दन विश्वविद्यालय में कानून का अध्ययन किया, लेकिन 1890 में बिना डिग्री प्राप्त किये ही स्वदेश वापस आ गये। सन् 1883 में मृणालिनी देवी के साथ उनका विवाह हुआ। उनकी प्रमुख कृतियों में–गीतांजलि, गीताली, गीतिमाल्य, कथाओं कहानी, शिशु, शिशु भोलानाथ, कणिका, क्षणिका, खेया आदि प्रमुख हैं। उसके बाद वे गुरुदेव के नाम से प्रसिद्ध हो गये। टैगोर की काव्यरचना गीतांजलि के लिए उन्हें 1913 में साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। टैगोर बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली थे। वे एक महान कवि, कहानीकार, गीतकार, संगीतकार, नाटककार, निबन्धकार तथा चित्रकार थे। उन्हें कला की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं मिली थी। उसके बाद उन्होंने घर का दायित्व सम्भाल लिया। उन्हें प्रकृति से बहुत लगाव था। उनका मानना था कि विद्यार्थियों को प्राकृतिक वातावरण में ही पढ़ाई करनी चाहिये। वे अकेले ऐसे कवि हैं जिनकी लिखी हुई दो रचनाएँ भारत और बांग्लादेश का राष्ट्रगान बनीं। उनकी अधिकतर रचनाएँ आम आदमी पर केन्द्रित हैं। उनकी रचनाओं में सरलता, अनूठापन एवं दिव्यता है। उन्होंने अपनी पहली कविता 8 वर्ष की छोटी आयु में ही लिख दी थी जब उनकी रचनाओं का अंग्रेजी अनुवाद होने लगा तब सम्पूर्ण विश्व को उनकी प्रतिभा के बारे में पता चला। इस महान रचनाकार ने 2000 से भी अधिक गीत लिखे। 1919 में हुए जलियाँवाला बाग हत्याकांड की टैगोर ने निन्दा की और इसके विरोध में उन्होंने अपना 'सर' का खिताब लौटा दिया। इस पर अंग्रेजी समाचार पत्रों ने टैगोर की बहुत निन्दा की। टैगोर की कविताओं को सबसे पहले विलियम रोथेनस्टाइन ने पढ़ा और ये रचनाएँ उन्हें इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने पश्चिमी जगत के लेखकों, कवियों, चित्रकारों और चिन्तकों से टैगोर का परिचय कराया। काबुली वाला, मास्टर साहब और पोस्टमास्टर ये उनकी कुछ प्रमुख प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। उनकी रचनाओं के पात्र रचना समाप्त होने तक असाधारण बन जाते हैं। उन्होंने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में चित्र बनाने प्रारम्भ किये और उनकी कलाकृति भी उत्कृष्ट थीं।
उन्होंने जीवन की प्रत्येक सच्चाई को सहजता के साथ स्वीकार किया और जीवन के अन्तिम समय तक सक्रिय रहे। 7 अगस्त 1941 को यह महान व्यक्तित्व इस संसार को छोड़कर चला गया।

अध्ययन के उद्देश्य

- रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।
- रविन्द्रनाथ टैगोर जी के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

परिकल्पना

- रविन्द्रनाथ टैगोर जी के शैक्षिक दर्शन का समाज पर साकारात्मक प्रभाव हैं।

आँकडों का संग्रह एवं अध्ययन विधि

वर्तमान अध्ययन में आँकडों के स्रोत रविन्द्रनाथ टैगोर जी के शैक्षिक दर्शन पर आधारित है। इसलिए शोधार्थी ने विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र करने का निर्णय लिया। आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए शोधार्थी ने प्रासंगिक साहित्य का व्यापक उपयोग किया। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण का

उपयोग किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों को शामिल किया गया है।

1. प्राथमिक डेटा का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है।
2. द्वितीयक डेटा का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, पुस्तकों, ऑनलाइन पोर्टलों, समाचार पत्रों के लेखों और विभिन्न वेबसाइटों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है।

टैगोर ने शोध विधि को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों प्रकृति के वास्तविक तथ्यों और समाज के वास्तविक जीवन के अनुकूल बनाने पर बल दिया। उनके अनुसार अतीत को झॉककर, दार्शनिक चिंतन एवं शिक्षा की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन, सर्वेक्षण प्रयोग या अन्य विधि से नहीं किया जा सकता। इसलिये प्रस्तुत शोध प्रबंध की विधि, पुस्तकालय अध्ययन पर ही आधारित न होकर इसमें प्राकृतिक वातावरण पर भी जोर दिया गया है, जिसे बालक सीधे एवं प्रत्यक्ष रूप से सीखता है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

अध्ययन का सीमांकन

किसी भी अनुसंधान को वैध, विश्वसनीय, तर्कसंगत परिणाम तक पहुँचाने हेतु समस्या का सीमांकन आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन को आधार बनाया गया है। उनसे संबंधित ग्रंथों, साहित्य व्याख्यानों का उपयोग करने हेतु उनके आधुनिक दृष्टिकोंण को शैक्षिक विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकीं प्रासंगिकता का अध्ययन करना ही इस शोध का सीमांकन है।

रविन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन

रवींद्रनाथ टैगोर ने भारतीय शिक्षा में एक नये प्रयोग का सूत्रपात किया। टैगोर ने शिक्षा के सिद्धान्तों की खोज अपने अनुभव से की है। वे भारतीय आदर्शों से प्रभावित तो थे ही, पाश्चात्य विचारों के प्रति भी वे जाग्रत थे। उन्होंने अपने शैक्षिक प्रयोग को प्रारम्भ करने के पहले रूसो के विचारों से, फ्रोबेल के किण्डरगार्टन स्कूल से तथा डीवी की शैक्षिक विचारधारा से अवश्य परिचय प्राप्त किया होगा किन्तु इनके सिद्धान्तों को वे सर्वत्र सत्य मानने को तत्पर न हुए होंगे। इसका आधार यह है कि उन्होंने अपने शान्ति–निकेतन में किसी पाश्चात्य शैक्षिक विचारधारा का अनुकरण नहीं किया और न ही अपने विद्यालय को किसी पश्चिमी शिक्षा–प्रणाली पर आधारित किया। उनके शैक्षिक विचार उनके अपने अनुभव पर आधारित थे। 'विश्वभारती' के संस्थापक के रूप में वे एक व्यावहारिक शिक्षा शास्त्री होने का परिचय देते हैं।

टैगोर सच्ची शिक्षा के द्वारा वर्तमान के सभी वस्तुओं में मेल और प्रेम की भावना विकसित करना चाहते थे।

उनका विश्वास था कि शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को स्वतंत्र वातावरण मिलना परम आवश्यक है। रूसो की भांति टैगोर भी प्रकृति को बालक की शिक्षा को सर्वश्रेष्ठ साधन मानते थे। रवींद्रनाथ टैगोर ने लिखा है "प्रकृति के पश्चात बालक को समाजिक व्यवहार की धारा के सपर्क में आना चाहिए।" रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा उसकी मातृ भाषा के माध्यम से होनी चाहिए।

शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए और रचनात्मक प्रवृत्तियों के विकास के लिए आत्मप्रकाशन का अवसर दिया जाना चाहिए। शिक्षा नगरो से दूर प्रकृति की गोद में होनी चाहिए। शिक्षा द्वारा समस्त शक्तियों का सामंजस्य पूर्ण विकास होनी चाहिए। और प्रकृति वातावरण में स्वतंत्रता पूर्वक स्वयं करके सीखने का अवसर मिलना चाहिए।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा की धारणा शरीर तथा आत्मा से है, जो प्रकृति की गोद में स्वस्थ एवं शांत प्रसन्नचित होकर विकास करता है। गुरुदेव भारत में एक ऐसी शिक्षा चाहते थे जो वातावरण के निकटतम सम्पर्क में दी जाये। वह समझते थे कि शिक्षा का उद्देश्य सम्पूर्ण प्रकृति तथा सम्पूर्ण जीवन से व्यक्ति में एकत्व की भावना का विकास है। सुसंयोजित व्यक्ति के लिए वह एकत्व की भावना ही सबसे महत्त्वपूर्ण समझते थे। वह चाहते थे कि शिक्षा द्वारा विद्यार्थी में यह क्षमता विकसित हो जाये कि वह प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर सके और समाज के साथ मनुष्यता का व्यवहार कर सके।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन करते हुए डॉक्टर एस.बी मुखर्जी ने लिखा है "टैगोर आधुनिक भारत में शैक्षिक पुनरुत्थान के सबसे महान पैगंबर थे। वे अपने देश के सामने शिक्षा के सर्वोच्च आदर्शों को स्थापित करने के लिए निरंतर संघर्ष करते रहे तथा उन्होंने अपनी शिक्षा संस्थाओं में शैक्षिक प्रयोग किए जिन्होंने उनको आदर्श का सजीव प्रतीक बना दिया।

रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन सम्पूर्ण मानव जाति के लिये है, उनकी शिक्षा सार्वभौमिक तथा उन मानवीय मूल्यों को प्रतिपादित करती है, जिनकी उपादेयता सभी के लिये है यदि बालक को एक आदर्श नागरिक बनाना है, तो हमें उसमें अच्छे संस्कार, विचारों में परिवर्तन, परिमार्जन तथा परिवर्धन लाना होगा। हमें रविन्द्रनाथ जी के शैक्षिक दर्शन को अपनी शैक्षिक पृष्ठभूमि में अत्मसात् करना होगा।

टैगोर के अनुसार बालक को केवल पाठ्य–पुस्तकों का ही अध्ययन नहीं करना चाहिये वरन् सभी सामाग्रियों से सीधे ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। टैगोर की शिक्षा हमें नैतिकता का पाठ पढ़ाती है। नैतिकता के अभाव में कोई भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। यह नैतिकता हमें अच्छें अनुशासन से मिलती है। वे बालक को कठोर दण्ड देने के विरोधी है। इन्होंने अनुशासन को एक नैतिक मूल्य या आदर्श माना है। टैगोर ने अनुशासन के अर्थ को स्पष्ट करते हुये कहते है– "वास्तविक अनुशासन का अर्थ है अपरिपक्व एवं स्वाभाविक आवेगों की अनुचित उत्तेजना और दिशाओं में विकास से सुरक्षा, स्वाभाविक अनुशासन की इस स्थिति में रहना छोटे बच्चों के लिये सुखदायक है। यह उनके पूर्ण विकास में सहायक होता है।''

टैगोर ने समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिये एक ऐसी शिक्षा की संकल्पना की जो मानव का पूर्ण एवं संतुलित विकास करें जिसमें समाज एवं राष्ट्र दोनों की प्रगति हो। जिसके लिये उन्होंने अपने समय की क्रमबद्ध तथा निष्क्रिय शिक्षा का विरोध किया और बताया कि सभी शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिये कि वह बालक को जीवन तथा विश्व के स्वर के मिलन से पूर्णतया अवगत् कराये तथा दोनों के मेल के मध्य संतुलन स्थापित करें। टैगोर ने इस आदर्श को अपने विश्व–भारती में पूरा किया।

टैगोर ने विद्यार्थी जीवन को बहुत पवित्र माना है। विद्यार्थियों में शिक्षण के दौरान कुछ आवश्यक गुणों की अपेक्षा की है–व्यवहार में विनम्रता, आचरण में व्यवस्था और स्वच्छता, नियमों और आज्ञाओं का पालन, शरीर एवं वातावरण की सफाई, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में अनुशासन, आत्मानुभूमि आदि। इनमें से अधिकांश नियम आज भी उपयोगी है, जिनका पालन करके सभी विद्यार्थी समाज व राष्ट्र के नागरिक बन सकते है। टैगोर के समय में भी सदाचार एवं संयम पर विशेष बल दिया जाता था। आज गुरु एवं शिष्य के बीच बढ़ रही दूरी चिंता का विषय है। शिक्षक केवल वेतन भोगी बनकर रह गया है, शिष्य ने शिक्षक के प्रति शिष्टाचार व सम्मान को तिलांजलि दे दी है, इसके लिये

जिम्मेदार हमारी शिक्षा प्रणाली है, अतः हमें ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो बालकों में अच्छी भावना को जन्म दे सकें। इसके लिये टैगोर ने शिक्षक को अपनी शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

रविन्द्रनाथ टैगोर ने ऐसी शिक्षण विधि पर बल दिया, जिससे बालक की जिज्ञासा और रूचि बनी रहे। टैगोर ने निम्नलिखित विधि पर बल दिया –भ्रमण के समय पढ़ाना, क्रिया विधि, वाद–विवाद तथा प्रश्नोत्तक विधि। टैगोर के समय में शिक्षा के स्तर मौजूद नहीं थे। अतः उनके जो विचार एवं वैज्ञानिक चिंतन है, उसमें शिक्षा का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता। उनकी आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा सार्वभौमिक एवं उन मानवीय मूल्यों को प्रतिपादित करती है, जिनकी उपयोगिता एवं सार्थकता प्रत्येक देश तथा काल में सदैव बनी रहेगी।

रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार जानकारी के माध्यम से लोग सशक्त बन सकते हैं, लेकिन वे सहानुभूति के माध्यम से अस्तित्व की पूर्णता प्राप्त करते हैं। सच्ची शिक्षा का उद्देश्य पूर्णता की यह भावना प्राप्त करने में मनुष्यों की सहायता करना होना चाहिए। शिक्षा से योग्य और नैतिक रूप से विचारशील व्यक्तित्वों का निर्माण होना चाहिए, जो मतभेदों से ऊपर उठने में सक्षम हों और जो जीवन एवं विविधता के प्रति व्यापक दृष्टिकोण रखते हों। इसके द्वारा सहानुभूति, सेवा और आत्म–बलिदान की भावना विकसित करनी चाहिए, इसके अलावा, इसे हमारे आस–पास की चीजों के महत्व की भावना भी उत्पन्न करनी चाहिए, जो मानव–जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए मानव–जाति की भलाई के लिए संसाधनों के प्रभावी और साधारणीय उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए। एकरूपता, व्यक्ति को समाज में प्रभुत्वशाली प्रतिमानों का अंधानुकरण करने के लिए विवश कर सकती है। एकता शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण करती है। इस परिदृश्य में, मूल्य–आधारित शिक्षा नागरिकों को मतभेदों के प्रति सहिष्णु बनाने और शांतिपूर्वक रहने में सक्षम बनाती है। इससे ठहराव के बजाय समाज का क्रमिक विकास होता है। मानव जीवन के आसपास की चीजों के महत्व के विषय में जानकारी से संसाधनों का संधारणीय और विवेकपूर्ण उपयोग होता है और संसाधन संरक्षण, अंगीकरण और शमन जैसी प्रथाओं को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम को व्यवस्थित रूप से प्रकृति पर आधारित होना चाहिए। कई दोषयुक्त रेखाओं के साथ विभाजित और संसाधनों के संकट का सामना कर रहा भारतीय समाज, अपनी शिक्षा प्रणाली में इस प्रकार के बदलावों को अपनाकर सर्वाधिक लाभ उठा सकता है।

ऐसी शिक्षा प्रणाली के निर्माण हेतु समाज के सभी हितधारकों की ओर से सक्रिय योगदान की आवश्यकता है। इसे लाभ अर्जित करने वाले नागरिकों के बजाय नैतिक रूप से मजबूत तथा वैश्विक नागरिकों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इसलिए आज आवश्यकता शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार बदलने की है कि जो व्यक्ति और समाज का समुचित संश्लेषण करे और शेष मानवता के साथ व्यक्ति की मूलभूत एकता को साकार करने में सहायता करे।

रविन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय संस्कृति के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा की नींव डाली। टैगोर ने शिक्षा का स्वरूप् अर्थ, समृद्ध और पूर्ण रूप् में लिया है। जीवन की पूर्णता के लिये टैगोर ने जो विधान निर्मित किया है वह भारतीय और पाश्चात्य दोनों के जीवन को स्पर्श करती है उसमें आध्यात्मिक और भौतिक दोनों तत्वों का समन्वय है। दर्शन और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों का समन्वय करके टैगोर ने भारतीय शिक्षा में महान् क्रांति की है। अतः वर्तमान में रविन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षा संबंधित सिद्धांतों की महत्ता आवश्यक है जो हमारी आने वाली पीढ़ी को नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की ओर आकृष्ट करके उनकी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करते हुये चरित्र में उत्तम गुणों का विकास करे, जिससे वैश्विक एकता बनी रहे।

सन्दर्भ सूची

1. पचौरी गिरीश एवं पचौरी रितु–उभरते भारतीय समाज में शिक्षक की भूमिका आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
2. भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें प्रो. एस. पी. गुप्ता, श्रीमती (डा) अलका गुप्ता शारदा पुस्तक भवन, पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद
3. सक्सेना स्वरूप एन. आर.–''शिक्षा सिद्धांत''–आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ
4. गुप्ता एस. पी.–भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, गुप्ता अलका–शारदा पुस्तक भवन युनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद
5. लाल बिहारी–प्रो, रमन एवं तोमर गजेन्द्र सिंह–विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक–प्रकाशक आर. लाल बुक डिपो मेरठ
6. शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त–पी.डी. पाठक, जी.एस.डी. त्यागी प्रकाशक – विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
7. विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक, लाल एवं तोमर (प्रो0 रमन बिहारी लाल, डॉ0 गजेन्द्र सिंह तोमर) आर लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेण्ट इण्टर कालेज मेरठ